P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-2* May (Part-1)- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

डीग का स्वर्णिम इतिहास – जाट शासकों की स्थापत्य कला में रूचि के संदर्भ में

सारांश

स्थापत्य की दृष्टि से डीग का इतिहास भी उतना ही प्राचीन है जितना मानव सभ्यता का इतिहास। इतिहास के साधनों में शिलालेख, पट्टिकाएं, पुरालेख और साहित्य के समानान्तर कला भी एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इसके द्वारा हमें मानव की मानसिक प्रवृत्तियों का ज्ञान ही प्राप्त नहीं होता बल्कि उनके निर्मितिकरण में उनका कौशल भी दिखाई देता है। यह कौशल तत्कालीन मानव के विज्ञान तथा तकनीक के साथ–साथ समाजिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक विषयों का तथ्यात्मक व विश्लेषणात्मक विवरण प्रदान करने में इतिहास का स्रोत बन जाता है। इसमें स्थापत्य कला, मूर्तिकला, चित्रकला, शृंगार प्रसाधन, घरेलू उपकरण इत्यादि जैसे कई विषय लेख में समाहित किए गये हैं। इस लेख में डीग के महल, किले, दुर्ग, मन्दिर, उद्यान आदि की स्थापत्य कला, चित्रकला, वास्तुकला का वर्णन किया गया है।

मोनिका ठेनुआ
शोधार्थी,
ललित कला संकाय,
वनस्थली विद्यापीठ,
निवाई, राजस्थान, भारत

किरण सरना
प्रोफेसर,
ललित कला संकाय,
वनस्थली विद्यापीठ,
निवाई, राजस्थान, भारत

मुख्य शब्द : धवलगिरी = सफेद, यदुवंशी = यादव, भद्रजन = शालीन व्यक्ति, उकेरी = छपाई, सुदृढ़ = मजबूत, बुर्जे = आक्रमण करने के लिए बनाई जाने वाली दीवारें, पाटना = जोड़ना, पित्रा–ड्यूरा शैली = पत्थरों में जाने वाली चित्रकाकरी।

प्रस्तावना

भारतवर्ष में मुगल साम्राज्य की स्थापना के बाद और विशेषकर सत्रहवीं शताब्दी में मुगल सम्राटों की बढ़ती हुई धर्मान्ध कट्टरतापूर्ण नीतियों की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप हिन्दू जातियों में नव चेतना उत्पन्न हुई, तब घोर अमानवीय अत्याचार, अपने धर्म की रक्षा एवं अस्मत बचाने के लिये मौलिक सूझ–बूझ और अद्भुत वास्तुकला विज्ञता का परिचय देते हुए अनेक दुर्ग, किलों व महलों का निर्माण करवाया।[1] भरतपुर के जाट महाराजाओं का इतिहास बहुत ही गौरवशाली रहा है। पूर्व मुस्लिम काल में बयाना में गुर्जर प्रतिहार वंश के राजपूतों का राज्य था।[2] जबकि कन्नौज के गुर्जर प्रतिहार वंशीय राजपूतों की चौहान खाँप के इसूका नामक शासक ने सन् 842 ई. में धवलगिरी 'धौलपुर' में अपना राज्य स्थापित कर लिया था। सन् 1018 ई. में महमूद गजनवी के आक्रमण के समय मधुवर 'मथुरा' तथा इसके समीपस्थ क्षेत्र कुला चन्द नामक यदुवंशीय शासक के अधीन था। महाराजा सूरजमल के समय भरतपुर राज्य की सीमा आगरा, धौलपुर, मैनपुरी, हाथरस, अलीगढ़, इटावा, मेरठ, रोहतक, फर्रूखनगर, मेवात, रेवाडी, गुरूग्राम तथा मथुरा तक के विस्तृत भू–भाग पर फैली हुई थी।

सन् 1707 में औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् भारत में राजनैतिक संघर्ष एवं अशान्ति काल में सर्वोच्चता एवं श्रेष्ठता के लिए अनेक जातियों में संघर्ष हुआ[3], इस संघर्ष में जाटों ने सभी जातियों एवं बाहरी शक्तियों पर भी अपनी अजेयता एवं श्रेष्ठता की छाप छोडी। संघर्ष और शत्रु सेना से लोहा लेने के लिए जाटों ने अनेक स्थानों पर अति सुदृढ़ एवं अजेय दुर्गों का निर्माण किया। इन दुर्गों का निर्माण जाटों ने अति बुद्धिमता एवं कुशलता से इस प्रकार किया कि तत्कालीन एशिया के श्रेष्ठ सेनापति अहमद शाह अब्दाली एवं विश्व में अपनी श्रेष्ठता की छाप छोड़ने वाले अंग्रेजों को भी इन दुर्गों के सामने पराजय स्वीकार कर वापस जाना पड़ा। इन प्रमुख दुर्गों के स्थापत्य का उल्लेख अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

भारतीय इतिहास के अशान्ति काल में अपने राजनैतिक उत्थान के लिए संघर्ष करते हुए भी कला के क्षेत्र में जो कार्य वैसे तो भरतपुर जिले के जाट महाराजाओं ने बड़ी कुशलता से किए हैं फिर भी सूरजमल द्वारा किए गये कार्य निश्चित रूप से वे उस सम्पूर्ण काल में सर्वाधिक श्रेष्ठ एवं महान हैं।[4] स्थापत्य कला एवं वास्तुकला के क्षेत्र में जाटों का महान कार्य उनके द्वारा निर्मित विशाल

एवं अजेय दुर्गों, श्रेष्ठ महलों, पवित्र मन्दिरों एवं भव्य स्मारकों से परिलक्षित होता है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्राचीन सभ्यताओं में लिखित शिलालेखों के अवशेषों की अनुपस्थिति में स्थापत्य के अवशेषों के द्वारा ही अज्ञातकाल का इतिहास समझने में आसानी होती है जो स्मृति से विलुप्त हो चुके युगों की खोज को सकारात्मक रूप देने में सहायक सिद्ध होती है। इसके अन्तर्गत स्थापत्य की दृष्टि से डीग शहर की ऐतिहासिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना आवश्यक हो गया है। इसी को मद्दनजर रखते हुए हमारे द्वारा यह लेख प्रकाशित करवाया गया है।

डीग : एक परिचय

18वीं सदी के पहले डीग, पूर्वी राजस्थान के एक छोटे से गांव के रूप में जाना जाता था जो तत्कालीन मुगल साम्राज्य के आगरा सूबे का एक भाग था। पारम्परिक रूप से यह क्षेत्र पवित्र ब्रजभूमि के अन्तर्गत आता है जिसके अतीत का सम्बन्ध पौराणिक कथाओं के वीर कृष्ण और उनके वंशज यादवों से जोड़ा जाता रहा है, जो स्थानीय विश्वास के अनुसार आधुनिक जाटों के पूर्वज थे।[5]

सूरजमल, महान मुगल निर्माताओं के कलात्मक विरासत के योग्य उत्तराधिकारियों में से एक था। यही कारण है कि लौकिकता, अनुपातगत सन्तुलन तथा इन तत्वों का उचित सामन्जस्य, जहाँ इस स्थापत्य शैली की अनिवार्यता बन पड़ी है, वहीं अपने विकास के अल्पकालीन होने के बावजूद कतिपय तत्व, नये व विशिष्ट बनकर सामने उभरे हैं।

वर्तमान में भरतपुर से 34 कि.मी. उत्तर में डीग नामक बागों का खूबसूरत नगर है। महाराजा सूरजमल द्वारा निर्मित शहर के मुख्य आकर्षणों में मनमोहक दुर्ग, किला, मन्दिर, उद्यान, सुन्दर फव्वारा और भव्य जलमहल शामिल हैं।[6] यह शहर बडी संख्या में पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है। इस महल में स्थित गोपाल भवन से गोपाल सागर का नजारा बेहद मनमोहक है। भवन के दोनों और दो छोटी इमारते हैं जिन्हें सावन भवन और भादो भवन के नाम से पुकारा जाता है। राधा और कृष्ण तथा ब्रज ललनाओं की प्रेम और प्रीति की लीलाएं इनका मुख्य विषय हैं। यहाँ रासलीलाओं के आयोजन होते रहते हैं। इस क्षेत्र में फाल्गुन व श्रावण महीनों में राधा व कृष्ण के स्वरूप बने कलाकारों की लोग भक्ति भाव से पूजा कर आरती उतारते हैं। डीग का काफी क्षेत्र ब्रज चौरासी कोस यात्रा के अन्तर्गत आता है जहाँ श्रीकृष्ण ने लीलाएं की थी।

महाराजा सूरजमल के शासनकाल में जाट समुदाय की शक्ति अपने चरम पर पहुंच गई। एक योग्य कूटनीतिज्ञ व सेनापति होने के साथ–साथ वह अपने समय का महान निर्माता भी था। यद्यपि प्रशासनिक मुख्यालय के रूप में उसने भरतपुर को ही ज्यादा महत्व दिया तथापि डीग से उसका मोहभंग भी न हो सका।[7] परिणामतः डीग सूरजमल के शासनकाल में दूसरी राजधानी के रूप में कार्य करने लगा। इस तरह डीग एक शहर के रूप में कहीं अधिक आकर्षक, समृद्ध एवं परिमाप में बड़ा होता चला गया। कई मुगल भद्रजनों, युवराजों, व्यापारियों आदि के अपने परिवार व धन की सुरक्षा हेतु यहाँ बसाव होने के कारण यह शहर ऊँची अट्टालिकाओं से सुसज्जित नजर आने लगा। सुन्दर एवं विशाल बगीचों से शहर का सौन्दर्यीकरण किया जाना, सूरजमल की सबसे महत्वपूर्ण कलात्मक देन थी जो आज भी जाटों के इस महानायक की गौरवपूर्ण स्मृति के रूप में जीवित है।[8]

महाराजा सूरजमल के ऐतिहासिक गौरव, सांस्कृतिक वैभव और प्राकृतिक संषमा के साथ साथ, जाट शैली की बेजोड वास्तुकला ने भी डीग की महिमा में चार चांद लगाये हैं। जहाँ सूरजमल ने डीग के महलों, सुरम्य उद्यानों व विचित्र शैली के मनोहारी फव्वारों, भरतपर के देवालयों और गोवर्धन की छतरियों में हिन्दू व मुगल स्थापत्य कला का समन्वय एक नवीन जाट वास्तुकला के रूप में विकसित किया, वहाँ डीग, कुम्हेर, भरतपुर, वैर, बयाना आदि स्थानों पर मैदानी दुर्गों के निर्माण में महाराजा सूरजमल के शासन की परिपक्वता स्पष्ट झलकती है।[9]

समीक्षा

परिकल्पना

'जाट शैली' की संज्ञा से विभूषित किए जाने वाले डीग के स्थापत्य का प्रतिनिधित्व उसके महलों व भवनों द्वारा किया जाता है, जिसमें वस्तुतः स्थापत्य की कोई विशिष्ट या नवीन शैली का प्रयोग नहीं हुआ है। बदन सिंह द्वारा निर्मित महल को छोड़कर अन्य सभी महल वास्तव में एक ही योजना विन्यास के अभिन्न अंग हैं और उनमें स्थापत्य की अपनी कोई मौलिकता नहीं है। इसके बावजूद इनकी साज–सज्जा व प्रस्तुतिकरण का जो एक सौन्दर्य है, वह निश्चित रूप से इस स्थापत्य की अपनी महत्वपूर्ण विशिष्टता है। सुरम्य भू–संरचना सहित स्थापत्य के मूल तत्व वही हैं जिनका प्रयोग मुगल शासक शाहजहाँ द्वारा निर्मित इमारतों में हुआ। मुगल दरबार व उसकी संस्कृति ने उत्तर भारत के समस्त समकालीन रियासतों के लिए एक आदर्श के रूप में कार्य किया लेकिन जहाँ एक ओर ताज स्थापत्यों के वैध उत्तराधिकारी उसके लचीले सौंदर्य प्रस्तुति की शैली को अब महत्वहीनता की ओर ले जा रहे थे, वहीं जाट निर्माता अपने इस नितान्त स्थानीय निर्माण में उन्हीं तत्वों के तार्किक विकास अपनाकर उसे बिल्कुल विशिष्ट शैली का रूप प्रदान कर रहे थे।[10] यही कारण है कि लौकिकता, अनुपातगत संतुलन तथा इन तत्वों का उचित सामंजस्य से जहाँ इस स्थापत्य शैली की अनिवार्यता बन पड़ी है, वहीं अपने विकास के अल्पकालीन होने के बावजूद कतिपय तत्व, नये व विशिष्ट बनकर सामने उभरे हैं।

जाट शासकों की स्थापत्य कला में रूचि

एक ओर जहाँ बदनसिंह द्वारा निर्मित पुराने महल विशालता, कम सन्तुलित, अन्दरूनी व्यवस्था में कम आकर्षक, तथा अपेक्षाकृत कम सजावट वाले तोड़े व स्तम्भों की चारित्रिक विशिष्टता लिए हुए है, वहीं दूसरी ओर सूरजमल निर्मित भवन अपने विभिन्न अवयवों में सामंजस्य व अनुपातगत सन्तुलन, पाषाण भित्तियों पर लचीली उकेरी तथा दोहरी छत व्यवस्था द्वारा आकर्षक बन पड़े हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि जहाँ पिता की

अभिरूचि एक राजपूत युवराज के ज्यादा निकट थी तो वहीं पुत्र एक मुगल अमीर के ज्यादा करीब था।[11]

महलों का निर्माण कार्य उसके शासन के उत्तरार्ध में प्रारम्भ किया गया और ऐसा माना जाता है कि अपनी मृत्यु सन् 1763 ई. तक वह गोपाल सागर सह गोपाल भवन तथा किशन भवन का निर्माण पूरा कर चुका था। डीग में स्थित सूरज भवन के साथ ही हरदेव भवन का परिवर्द्धन तथा डीग स्थित इमारतों का निर्माण भी महाराज सूरजमल द्वारा ही करवाया गया है। ऐसा माना जाता है कि इन निर्माणों के लिये, सूरजमल ने दिल्ली के एक बर्खास्त वजीर इमाद–उल–मुल्क से धन प्राप्त किया था, जो कि जाट प्रमुख का सहयोगी बन गया था। यह सारा निर्माण कार्य सूरजमल के मंत्री जीवाराम बनचारी के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। महाराज सूरजमल के निवास गृह को रामभवन का नाम दिया गया जो वर्तमान में स्थानीय अस्पताल के रूप में प्रयुक्त हो रहा है।

सुदृढ़ दुर्ग तथा ऊँचे रक्षा प्राचीर सहित बुर्जों का निर्माण 1730 ई. में बदनसिंह के पुत्र युवराज सूरजमल द्वारा करवाया गया। युवराज के रूप में सूरजमल की वैधता जयपुर के महाराज सवाई जयसिंह ने अपने अश्वमेघ यज्ञ के अवसर पर प्रदान की थी। किले का मुख्य आकर्षण यहाँ की घडी मिनार है जहाँ से न केवल पूरे महल को देखा जा सकता है बकि नीचे शहरों का नजारा भी लिया जा सकता है। इसके ऊपर एक बन्दूक रखी है जो आगरा किले से यहाँ लायी गयी थी। खाई, ऊँची दीवारे और द्वारों से घिरे इस किले के अवशेष मात्र आज भी देखे जा सकते हैं।[12]

यह दुर्ग जाट राजाओं का प्रिय निवास रहा है। इस दुर्ग का आकार पंचकोण के रूप में है जिसके चारों और मिट्टी का विशालकाय परकोटा, दीवारों को ठोक–ठोक कर बनाया गया था। यह दीवारें अधिक चौडी एवं लगभग 30 फुट ऊँची थी, यह दीवारें वर्तमान में जीर्णता की ओर है लेकिन अठारहवीं शताब्दी में इनका स्वरूप पर्वत के समान था। दुर्ग के सामरिक महत्व को और अधिक सम्पन्न बनाने के लिए दुर्ग के चारों ओर चार बडी बुर्जे हैं। शाह बुर्ज से लगभग ढाई फलांग दक्षिण की ओर गोपालगढ है, जो एक चतुष्कोण दुर्ग है। इसके चारों कोनों पर चार बडी बुर्जे हैं, जिनका सामरिक महत्व तत्कालीन समय में अमूल्य था। मुख्य डीग दुर्ग चौहरे परकोटे से आबद्ध है, जिसका भीतरी दुर्गम किला अभी ठीक स्थिति में है, जिसके चारों ओर बुर्ज बनाकर विशाल तोपें चढाई हुई हैं। इनमें लाखा बुर्ज अब भी दर्शनीय है। इन विशाल तोपों से शत्रु सेना दुर्ग के समीप नहीं आ पाती थी। दुर्ग के चारों ओर लगभग 20 फुट गहरी एवं चौडी खाई थी जिसमें सदैव पानी का प्रवाह बना रहता था। दुर्ग के मुख्य द्वार को पुल से जोडा गया है एवं इसकी रक्षा के लिए द्वार भी सामरिक महत्व से बनाया गया है। दुर्ग का महत्व प्रारम्भ में जाट राज्य में सर्वाधिक था एवं इसी महत्व के कारण यह भारत के तत्कालीन श्रेष्ठ एवं अजेय दुर्गों में गिना जाता था, लेकिन कालान्तर में भरतपुर दुर्ग ने इससे अधिक श्रेष्ठता प्राप्त की।

सूरजमल द्वारा निर्मित इस किले में निर्माण सामग्री के रूप में यहाँ ईट, पाषाण खण्ड तथा चूने के मसाले का भरपूर प्रयोग किया गया है। भवन की दीवारें गुलाबी रंग के बलुआ पत्थरों की पट्टिका से मढ़ी गई है अथवा उन पर अच्छी किस्म की चिनाई की गई है। केवल मात्र सूरज भवन संगमरमर से निर्मित है तथा किले के अन्दर के भवनों में लाल बलुआ पत्थर का प्रयोग भी किया गया है। निर्माता सूरजमल के नाम से विभूषित धवल संगमरमर का यह सुन्दर भवन, असामान्य अवस्थिति के कारण अपने सौन्दर्य को कुछ कम करता नजर आता है। वर्गाकार क्षेत्र में नियोजित इस एक मंजिले भवन की छत समतल है। निर्माण में प्रयुक्त सामग्री तथा इसके वास्तशिल्प की सामान्य विशिष्टताएं शाहजहां के स्थापत्य कला की याद ताजा करती है और इसका स्थापत्य प्रारूप कतिपय प्रारम्भिक मुगल इमारतों से साम्य रखता है।[13]

सूरज भवन की दीवारों में प्रयुक्त संगमरमर की पट्टिकाएं अपने आकार व संरचना में एक दूसरे से सामंजस्य नहीं रखती, अतः ऐसा प्रतीत होता है कि ये अवयव मुगलों के एक से अधिक शाही इमारतों से प्राप्त किए गये थे। ऐसी धारणा है कि ये पट्टिकाएं दिल्ली के किले स्थित राजकुमारियों के एक स्कूल का था, जो अन्य कई इमारतों के साथ जवाहिर सिंह के आक्रमण का शिकार हुआ।[14] कतिपय नवीन पट्टिकाओं का भी प्रयोग किया गया है जो किसी इमारत के अंश नहीं थे। इस बात का प्रमाण कुछ पट्टिकाओं पर डीग के वास्तुकारों के शिल्पी चिन्हों की मौजूदगी है। सम्भवतया जवाहिर सिंह की मृत्यु हो जाने के कारण यह इमारत पूरी तरह से निखर नहीं पायी। इस भवन का अधिकांश पश्चिमी हिस्सा, इसकी नींव, छजे तथा तोड़े बलुआ पत्थर के बने हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि संगमरमर द्वारा इसे पाटने का विचार बाद का था तथा संगमरमर से उनका सामंजस्य बिठाने हेतु नींव को छोड़कर उक्त सभी को चूने के अच्छे मसाले से लेपित कर दिया गया।

यह भवन चारों ओर से बरामदा युक्त है तथा प्रत्येक बरामदा पांच मेहराब वाले द्वारों से सामने की ओर खुलता है। बरामदे के प्रत्येक कोनों पर एक एक कमरा स्थित है, जिसकी छत अन्दर से मुगल इमारतों के समान गुम्बदनुमा तथा कमल की नक्काशी युक्त है। प्रत्येक बरामदे के मध्य में फव्वारा युक्त ताल मौजूद है, जिसके ऊपर चार पार्श्व कक्ष युक्त एक केन्द्रीय कक्ष मौजूद है। ये सभी कक्ष आपस में गलियारों द्वारा जुड़े हैं। केन्द्रीय कक्ष की दीवार का निचला भाग उत्कृष्ट पच्चीकारी शिल्प से सुसज्जित है और यही शिल्पकारी गलियारों तथा उनसे सम्बद्ध कक्षों के फर्श में भी मौजूद है। भवन के मुख्य कक्ष को खिड़कियों द्वारा प्रकाशमय किया गया है। इन खिड़कियों की उपस्थिति दीवारों की एकरसता को बहुत हद तक कम कर देती है। अर्द्धवृत्ताकार मेहराब से सहारा लिये दीर्घाओं की ढोलाकार छत आकर्षण का केन्द्र है। संगमरमर की पट्टिकाओं पर मुगल शिल्पियों द्वारा पित्रा–ड्यूरा शैली में उत्खचित पौधे भवन की सुन्दरता को रोचक बना देते हैं।

सूरज भवन की आन्तरिक व्यवस्था किसी निवास कक्ष की अपेक्षा काफी हद तक एक दीर्घा की भांति है, सम्भवतः जिसका विन्यास विशेषकर स्त्रियों के आराम व मनोरंजन को ध्यान में रखकर किया गया था। भवन के

पूर्व में स्थित बरामदा युक्त कतिपय कमरों का निर्माण सम्भवतः इसकी स्थापत्य प्रभावोत्पादाकता को संजोए रखने हेतु किया गया था।[15] निःसन्देह सरोवर व उद्यान के मध्य स्थित एवं डीग स्थापत्य की विशिष्टता लिए हुए, संगमरमर की पट्टिकाओं में लिपटा यह भवन किसी को भी अपनी ओर आकर्षित कर लेता है।

सूरज भवन के ठीक पीछे स्थित यह आकर्षक आयताकार उद्यानयुक्त भवन योजना विन्यास में मध्ययुगीन विशेषकर मुगलकालीन भवनों के समरूप है। मुख्य परिसर के कोने में इसकी अवस्थिति से प्रतीत होता है कि यह डीग भवन योजना का मुख्य भाग नहीं था। सम्भव है कि यह प्रारम्भ मे एक छोटा भवन रहा हो तथा बाद में अपनी आवश्यकताओं एवं अभिरूचि के अनुकूल सूरजमल ने इसका पुनर्निर्माण कराया हो। यह भी सम्भव है कि इसका उत्तरी भाग सूरज भवन के निर्माण की आवश्यकता हेतु विनष्ट कर दिया गया हो, जिसकी पुष्टि भवन की पूरी संरचना के गहन अवलोकन से की जाती है। भवन का पार्श्व भाग मौलिक जान पड़ता है।

हरदेव भवन की अलग अवस्थिति से ऐसा प्रतीत होता है कि यह राजकीय स्त्रियों के आवास हेतु बनाया गया था। मुख्य भवन के दोनों पार्श्वो में बरामदायुक्त साधारण भवन है। इनमें से पूर्वी भाग दो मंजिला है। हरदेव भवन स्थित उद्यान पूर्णतया निजी उपयोग हेतु था और स्त्री निवास के अनुकूल था। उद्यान की नहरों में लगे फव्वारे सीधे पाषाणकृत कमल के ऊपर स्थित है और किसी आकृति में ढले नहीं है। यह सुनिश्चित करना कठिन है कि यह मौलिक था अथवा परवर्ती।[16]

किशन भवन के पश्चिम में और इसके छत के बराबर की ऊँचाई पर एक विशाल जल कुण्ड निर्मित है। यह विशाल मेहराबों के एक समूह पर आधारित है, जो उत्तर की ओर दीवार से ढक दिए गये हैं। ऊँचाई पर इस जलाशय की स्थिति का एकमात्र कारण फव्वारों, जल प्रपातों तथा झरनों का बेहतर सम्भव तरीके से संचालन करना था। जल कुण्ड के उदग्र दीवारों में कई बड़े छिद्रों की व्यवस्था है, जो परिसर में स्थित विभिन्न समूह के फव्वारों से सम्बन्धित है। इसमें जल भराव हेतु समीप ही चार कुए स्थित है, जिनसे 'रहट प्रणाली' द्वारा उक्त जलाशय को भरा जाता था। इस जलायश को भरने में उन दिनों लगभग एक सप्ताह का समय लग जाता रहा होगा। सभी फव्वारे एक साथ खोल देने की स्थिति में इस जलाशय का जल कुछ ही घंटों में खाली हो जाता है।[17]

सन्तुलित ऊँचाई वाला एक तलीय केशव भवन वस्तुतः एक खुली दीर्घा है जिसमें प्रत्येक ओर के पांच मेहराब इसकी रोशनी तथा सान्दर्य को बढ़ाते हैं। इमारत के अन्दरूनी भाग की व्यवस्था वर्षा ऋतु का रूमानी अहसास पैदा करता है जो इस भवन का विशिष्ट पक्ष है। भवन के चारों ओर बनी मेहराबों की श्रृंखला इसका एक अन्दरूनी वर्गाकार बनाती है जो नहर द्वारा अपने बाह्य भाग से अलग है। नहर के मध्य में बड़े फव्वारों की श्रंखला के अतिरिक्त इसके पार्श्वो में छोटे–छोटे जेट लगे हैं। बाह्य रूप से ज्यादा प्रभावी न होते हुए भी अन्य भवनों के समान ह इसकी छत भी द्विसतही है। वस्तुतः इस व्यवस्था का उपयोग बादलों के गड़गड़ाहट के कृत्रिम प्रभाव को उत्पन्न करने के लिये किया गया था। निचला छत जो वस्तुतः एक नहर ही है, में पानी की संतुलित धार व उससे रगड़ खाते पाषाण गोलों द्वारा ऐसा ध्वनि भ्रम उत्पन्न किया जाता था। छत से निकलते नलों द्वारा मेहराबों के ऊपर से गिरने वाला पानी बारिश का पूरा वातावरण उत्पन्न कर देता था और फव्वारों से निकलने वाले रंग–बिरंगे जल से बना इन्द्रधनुष इस फंतासी को सम्पूर्णता प्रदान करता था।

महल के मुख्य परिसर के तीन मुख्य द्वारों में उत्तर की ओर स्थित सिंह पोल एक महत्वपूर्ण परन्तु अपूर्ण संरचना है। मेहराबयुक्त बाहर की ओर निकले मुख भाग वाला यह द्वार एक मेहराबदार गलियारा द्वारा अन्दरूनी परिसर से जुड़ा है।

डीग स्थित भवनों में संगमरमर का प्रयोग तथा सजावट की पच्चीकारी तकनीक के उपयोग किये जाने का श्रेय सूरजमल के पुत्र जवाहिर सिंह को जाता है। सौन्दर्यीकरण के इन अनुप्रयोगों में मुगल अभिरूचि की स्पष्ट झलक महसूस की जा सकती है। कई स्थापत्य कृतियाँ सूरजमल के समय से ही निर्माण प्रक्रिया में थी तथा कई के सुनिश्चित योजनानुसार निर्माण किया जाना था। परन्तु जवाहिर सिंह के अल्प समयावधि में ही निधन हो जाने के कारण सारे निर्माण कार्य अधूरे ही रह गये जो कभी पूरे नहीं किए जा सके। शहर के अन्दर जवाहरगंज का बसाव और निकट ही स्थित लक्ष्मण जी का मन्दिर भी सम्भवतः इस शासक की ही देन थी।[18]

सामान्यतः पक्का तालाब के नाम से जाना जाने वाला रूप सागर डीग की पुरानी संरचनाओं में से एक है। काफी लम्बे क्षेत्रफल में नियोजित यह सरोवर 6 मीटर गहरा है। सरोवर की उल्लेखनीय विशिष्टता इसके वे आरामदायक चढाई वाले घाट हैं, जो सरोवर के अन्दर तक गये लम्बे गलियारों व उनके अष्टभुजीय बुर्जो से कई खण्डों में बंट जाते हैं। उक्त व्यवस्था स्थापत्य के शिल्पविधान व सौन्दर्य को कई गुणा बढा देता है। एक स्थानीय अनुश्रुति के अनुसार रूपसागर, बदनसिंह के भाई रूपसिंह द्वारा बनवाया गया था।[19]

भरतपुर रियासत में जाट शासकों का आधिपत्य रहा है जिनमें महाराजा सूरजमल के पश्चात् यहाँ पर महाराजा जवाहर सिंह (1767–68), महाराजा रतन सिंह (1768–69), महाराजा केहरी सिंह (1769–71), महाराजा नवल सिंह (1771–76), महाराजा रणजीत सिंह (1776–1805), महाराजा रणधीर सिंह (1805–23), महाराजा बलदेव सिंह (1823–25), महाराजा बलवन्त सिंह (1825–53), महाराजा जसवन्त सिंह (1853–93) रहे हैं। इसके पश्चात् मत्स्य प्रदेश का हिस्सा बना जिसमें अलवर, धौलपुर, भरतपुर, करौली आदि राज्यों को सम्मिलित किया गया था। स्वतन्त्रता प्राप्ति तक महाराजा रामसिंह (1893–1900), महारानी गिरिराज कौर (1900–18), महाराजा किशन सिंह (1900–29), महाराजा ब्रजेन्द्र सिंह (1929–47) भरतपुर राज्य के उत्तराधिकारी रहे।[20]

वर्तमान में भरतपुर राज परिवार के वारिश विश्वेन्द्र सिंह हैं, जो पिछले काफी वर्षो से राजनीति में सक्रिय हैं तथ वर्तमान राज्य सरकार में पर्यटन मंत्री हैं।[21] इनके द्वारा किए गये अथक प्रयासों से ही भरतपुर में

राज्य सरकार द्वारा मेडिकल कॉलेज खोला गया है। आशा है कि विश्वेन्द्र सिंह भरतपुर जिले में शिक्षा के क्षेत्र में नए कॉलेज, स्कूल, विश्वविद्यालय की स्थापना कर नए आयाम स्थापित करेंगे। साथ ही पर्यटन को बढ़ावा देने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

निष्कर्ष

अन्त में परिशिष्ट के माध्यम से डीग के अतिरिक्त भरतपुर जिले के अन्य स्थानों पर जाट शासकों द्वारा स्थापत्य कला की दृष्टि से निर्मित महल, दुर्ग, उद्यान, मन्दिर से सम्बन्धित तकनीकी शब्दावली, उनका ऐतिहासिक एवं कलात्मक महत्व, वर्तमान में प्राप्त शिलालेख, ताम्रपत्र आदि से एकत्र जानकारी के साथ ही उद्यान में भारतीय पुरातत्व विभाग द्वारा लगाये गये सूचना पट्ट आदि का उल्लेख किया गया है।

सुझाव

इस लेख में डीग के दुर्ग, महल, मन्दिर आदि की स्थापत्य कला को सम्मिलित किया गया है फिर भी कला के क्षेत्र में नई जानकारियां प्राप्त करने हेतु विस्तृत शोध के लिए यह लेख उपयोगी सिद्ध होगा।

अंत टिप्पणी

1. *गिरीश चन्द द्विवेदी, द जाट्स – देयर रोल इन द मुगल एम्पायर*
2. *सरकार, जदुनाथ, फाल ऑफ द मुगल एम्पायर खण्ड–4*
3. *जी.एस. सरदेसाई, न्यू हिस्ट्री ऑफ द मराठाज, खण्ड II*
4. *राम पाण्डे, भरतपुर अप टू 1826 : ए सोशल एण्ड पॉलिटिकल हिस्ट्री ऑफ द जाट्स*
5. *ज्वालासहाय, हिस्ट्री ऑफ भरतपुर*
6. *देवनीश, जे.ए., द भवन्स एण्ड गार्डन वेलेसेज ऑफ डीग*
7. *जोशी, एम.सी., डीग, आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया*
8. *डॉ. चोब सिंह वर्मा, भरतपुर वीरता की एक दास्तान*
9. *रामवीर सिंह वर्मा, स्मारिका : महाराजा सूरजमल*
10. *राम पाण्डे, भरतपुर अपटु 1826*
11. *डॉ. राम प्रताप त्रिपाठी, मुगल साम्राज्य का उत्थान और पतन*
12. *रामवीर सिंह वर्मा, स्मारिका : महाराजा सूरजमल*
13. *डॉ. कुन्जबिहारी लाल गुप्ता, दी इवोल्यूशन ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ दी फारमर भरतपुर स्टेट 1722–1947*
14. *जिला जनसम्पर्क कार्यालय, भरतपुर, भरतपुर दर्शन*
15. *लेफ्टीनेंट रामस्वरूप जून सोलंकी, जाट इतिहास*
16. *देवनीश, जे.ए., द भवन्स एण्ड गार्डन वेलेसेज ऑफ डीग*
17. *देवनीश, जे.ए., द भवन्स एण्ड गार्डन वेलेसेज ऑफ डीग*
18. *लेफ्टीनेंट रामस्वरूप जून सोलंकी, जाट इतिहास*
19. *लेफ्टीनेंट रामस्वरूप जून सोलंकी, जाट इतिहास*
20. *लेफ्टीनेंट रामस्वरूप जून सोलंकी, जाट इतिहास*
21. *www.rajasthan.gov.in*